

॥३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

गाश्वैवमहिषीश्वैवतथावृद्धस्त्रियोपिच ॥ औदकानिचसत्वानिश्वापदानिवयांसिच ॥ ३३ ॥ जरायुजाण्डजातानिस्वेदजान्युद्भिदानिच ॥ पर्वतानपजातानिभूतानिददृशुश्चते ॥ ३४ ॥ एवंप्रमुदितंसर्वपशुगोधनधान्यतः ॥ यज्ञवाटंष्टपादृष्ट्वापरंविस्मयमागताः ॥ ३५ ॥ ब्राह्मणानांविशांचैवबहुमृष्टान्नमृद्धिमत् ॥ पूर्णशतसहस्रेतुविप्राणांतत्रभुंजतां ॥ ३६ ॥ दुंदुभिर्मैघनिर्घोषोमुहुर्मुहुरताज्यत ॥ विननादासरुच्चापिदिवसेदिवसेगते ॥ ३७ ॥ एवंसववतेयज्ञोधर्मराजस्यधीमतः ॥ अन्नस्यसुबहून्राजन्नुत्सर्गान्यर्वतोपमान् ॥ ३८ ॥ दधिकुल्याश्वददृशुःसर्पिषश्चरुहदानजनाः ॥ जंबूद्वीपोहिंसकलोनानाजनपदायुतः ॥ ३९ ॥ राजन्नदृश्यतैकस्थोराज्ञस्तस्यमहामखे ॥ तत्रजातिसहस्राणिपुरुषाणांततस्ततः ॥ ४० ॥ गृहीत्वाभाजनान्जग्मुर्बहूनिभरतर्षभ ॥ स्रग्विणश्चापितेसर्वेसुमृष्टमणिकुडलाः ॥ ४१ ॥ पर्येषेणद्विजातीस्तान्शतशोथसहस्रशः ॥ विविधान्यन्नपानानिपुरुषायेनुयायिनः ॥ तैर्वैनृपोपभोज्यानिब्राह्मणानांददुश्चह ॥ ४२ ॥ इति श्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्वणिअनुगीतापर्वणिअश्वमेधारंभेपंचाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८५ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥